Volume-5, Issue-01, January 2018 ISSN: 2349-7637 (Online)

RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

# मैन फॉर हिमसेल्फ' - एरिक फ्रॉम : एक समीक्षात्मक आलोचन

डॉ.राज नारायण व्यास

दर्शन शास्त्र विभाग, राज. डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)

मानव के समाज के रूप में संगठित होने की प्रारंभिक अवस्था से अब तक कर्तव्य-अकर्तव्य, करणीय-अकरणीय, देय-उपादेय, ग्राह्य-त्याज्य, शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित जैसे प्रश्न किसी न किसी रूप और आकार में विचारणीय रहे। है। विभिन्न नीतिशास्त्रीय विचारकों ने मानव-आचार की स्वमत और स्वविवेक के अनुसार सर्वोत्तम संहिता प्रस्तुत करने के प्रयास किए हैं। (मनुस्मृति, धर्मशास्त्र, पाश्चात्य नैतिक विचार आदि को इसी कोटि में रखा जा सकता है।)

परंपरागत नीतिशास्त्र प्रधानतः जहाँ मूल्यांकनपरक है। वहीं अधिनीतिशास्त्र विश्लेषणात्मक । यद्यपि परम्परागत नीतिशास्त्रियों ने भी किसी कार्य के औचित्य के आधार के रूप में सुख, उपयोगिता, आत्मपूर्णता आदि मापदण्ड प्रस्तुत करते हुए विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया है परन्तु अधिनीतिशास्त्र में तो विश्लेषण की यह प्रविधि केन्द्रीय भूमिका में है। किसी भी नैतिक निर्णय में 'क्या कहा गया है' की अपेक्षा 'क्यों और कैसे कहा गया है?' जैसे प्रश्न अधिनीतिशास्त्र में प्रमुखता प्राप्त करते हैं। इसीलिए अधिनीतिशास्त्र में नैतिक निर्णयों के स्वरूप को लेकर प्रकृतिवाद, वस्तुनिष्ठतावादसवेगवाद, परामर्शवाद आदि • सिद्धान्त प्रस्तुत किए जाते रहे हैं। इसी क्रम में नैतिक निर्णयों के उद्गम स्रोत तक पहुँचने के लिए मनोविश्लेषण के उपयोग का आग्रह इन दिनों प्रचलित होता जा रहा है और फ्रॉयड, जुंग, एरिकफ्रॉम आदि विचारकों के प्रयास इसी दिशा में हैं।

एरिकफ्रॉम ( 1900-1980) इस क्षेत्र में उल्लेखनीय विचारक है। वे एक व्यावसायिक मनोविश्लेषक के अलावा एक प्रतिबद्ध सामाजिक सिद्धान्तकार भी हैं जो वैयक्तिक मनो-समस्याओं के साथ ही सार्वजनिक समस्याओं पर भी ध्यान देते रहे हैं। उनके विचारों में एक प्रबल धार्मिक समझ, एक मानववादी नीतिशास्त्र के साथ ही नूतन संभावनाओं के प्रति एक मुक्त दृष्टि भी है। वे अनेक विरोधी माने जाने वाले विचार-बिन्दुओं की भी समीक्षा करते हुए अपने विचारों में उनका इलाध्य समन्वय प्रस्तुत करते हैं। अपने इस प्रयास में एक और उन्होंने मार्क्सवादीस्थापनाओं कीसम्यक् आलोचना करते हुए उनके सार को निस्संकोच ग्रहण किया है वहीं पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं में अन्तर्निहित तथा समकालीन विचारकों के विचारों में उपस्थित मानववादी और अस्तित्ववादी आग्रहों को भी अपने विचारों, पुस्तकों, आलेखों व भाषणों समाहित किया है। शिक्षा इनके विचारों का केन्द्र न होते हुए भी सामाजिक स्वरूप तथा मानवीय कार्य-कलापों पर उनके विचार शिक्षा- जगत् को भी विशेषतः उनको जो एक अधिक सभ्य समाज तथा एक अधिक श्रेष्ठ जीवन-शैली की स्थापना के लिए प्रयासरत है-प्रभावित व प्रेरित करते हैं। उनके चिन्तन के केन्द्रीय बिन्दु हैं--स्वतन्त्रता, अलगाव, प्रेम और अस्तित्व ।

फ्रॉम की रचनाओं में साइकोएनालेसिसएण्डरिलीजन (1950), सिगमण्डफॉयड'स मिशन (1958), मार्कस स कन्सेप्ट ऑफ मैन (1961) आदि के अलावा द फीयर ऑफ फ्रीडम, द आर्ट ऑफ लिविंग और मैनफॉरहिमसेल्फ आदि पुस्तकें लोकप्रिय व चर्चित रही है।

आलोच्य पुस्तक 'मैनफॉरहिमसेल्फ–एनइन्क्वायरी इन टू द साइकोलॉजी ऑफ एथिक्स' में फ्रॉम नैतिक निर्णयों को मनोविश्लेषणात्मक आधार पर आधृत करने का आग्रह करते हैं।

'मैनफॉरहिमसेल्फ' में चार अध्याय हैं-- (1) समस्या, (2) मानववादी नीतिशास्त्र (3) मानव प्रकृति एवं चरित्र तथा (4) मानववादी नीतिशास्त्र की समस्याएँ। स्वयं लेखक इस पुस्तक के अपने विचारों को अपनी पूर्व पुस्तक 'एस्केपफ्रॉमफ्रीडम' में व्यक्त विचारों का विस्तार मानते हैं। फ्रॉम के अनुसार 'मनोविज्ञान को न तो दर्शनशास्त्र व नीतिशास्त्र से और न ही समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र से अलग किया जा सकता है।' प्रथम अध्याय में ही फ्रॉम केवल बौद्धिक आधारों पर निर्मित-निर्धारित नैतिक मानकों य मूल्यों की अपर्याप्तता को दिखलाते हुए मनोविज्ञान- विशेषतः मनोविश्लेषण की नैतिक मूल्यों व मानकों के निर्धारण के लिए महती उपादेयता घोषित करते हैं। उनके अनुसार मनोविज्ञान की प्रगति 'तथाकथित प्राकृतिक' और 'तथाकथित आध्यात्मिक' जगत् के विलगाय में नहीं अपितु यह तो एक ऐसे मानववादी नीतिशास्त्र का मार्ग प्रशस्त करता है जो मनुष्य को एक संपूर्ण 'मनो-आध्यात्मिक' इकाई के रूप में देखता है, जिसके अनुसार मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य है To be himselतथा जिसके लिए सर्वोत्तम साधन है Man be

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

for himself द्वितीय अध्याय का प्रारम्भ फ्रॉम परागत प्राधिकारात्मक पतिशास्त्र की समीक्षा से करते है जिसमें बौद्धिक प्राधिकार का मापदण्ड 'सक्षमता' बताते हुए वे शुभ और अशुभ का विवेक बचपन से ही लादने की प्रवृति की और संकेत करते हैं। बच्चे के लिए शुभ-अशुभ की मानक उसके परिजनों की प्रतिक्रियाएँ होती है जबकि वयस्क अपने आवरण के औचित्य के लिए कुछ बौद्धिक आधार भी प्रस्तुत कर सकते हैं। फ्रॉम के शब्दों में मानव-विज्ञान (Science ol Man) का विषय मानव प्रकृति है। लेकिन यह विज्ञान मानव प्रकृति के सम्यक चित्र से प्रारम्भ नहीं करता। इसके विषय (मानव प्रकृति) की संतोषजनक परिभाषा इसके लक्ष्य और इसके परिसर के रूप में ही हो सकती है। इसकी प्रविधि है विभिन्न वैयक्तिक व सामाजिक स्थितियों में व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं का प्रेक्षण और इस प्रेक्षण के आधार पर मानव प्रकृति के बारे में अनुमान।

अगले अध्याय में इसी बिन्दु को फ्रॉम मानव प्रकृति और चरित्र के विस्तृत विवरण व समीक्षण द्वारा स्पष्ट करते हैं। ये मानव की जैविक दुर्बलता के माध्यम से उसे पशुओं से भिन्न ठहराते हैं। जहाँ पशु स्वयं को अपने परिवेश के अनुकूल बनाने का प्रयास करते है वहीं मनुष्य एक ओर अपनी जैविक दुर्बलताओं के कारण वैसा अनुकूलन नहीं कर पात वहीं वे इसकी बजाय अपने परिवेश को ही अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करते हैं। यह प्रवृति मनुष्यों में सहजात व अन्तर्निहित है। अतः स्पष्ट है कि मानवीय आचरण के मूल्यांकन के मापदण्डपाशवजगत् से भिन्न होंगे। इसी से मनुष्य के संदर्भ में अस्तित्यपरक व ऐतिहासिकतात्मक द्वन्द्व उपस्थित होता है। मनुष्य, प्रकृति में रहते हुए भी इसके अतिक्रमण के लिए प्रयत्नशील होता है। इसी अध्याय में वे मानद चरित्र की गतिक अवधारणा तथा उसके विभिन्न उत्पादक और अनुत्पादक आमुखीकरणों (Orientations) का वर्णन करते हुए केवल उत्पादक आमुखीकरण को ही मानव अस्तित्व के अनुभव व 'स्व' की प्राप्ति के लिए उपादेय मानते हैं। इसके लिए मनोविश्लेषणात्मक की आवश्यकता के संदर्भ में फ्रॉम लिखते हैं— अचेतन संप्रेरणा के मनोविश्लेषणात्मक प्रत्यय का महत्त्व नीतिशास्त्र के लिए किसी अन्य से कम नहीं है। नैतिक विचारों के विकास का लक्षण यह है कि मानवीय व्यवहार से संदर्भित इसके बैच निर्णय केवल उस व्यवहार पर नहीं अपितु उस व्यवहार के पीछे उपस्थित संप्रेरणाओं से संदर्भित हो। अतः अचेतन प्रेरणाओं की समझ नैतिकताओं के लिए आयामों का उद्घाटन करती है। इस प्रकार फॉर्मपरपरागत नीतिशास्त्र की रानीक्षा करते हुए नैतिक मानदण्डों की रचना के लिए एक अभिनव निकष प्रस्तुत करते हैं। लेकिन इस निष को अपनाने की यह प्रक्रिया और इससे उत्पन्न होने पाली स्थितियाँ भी समस्या रहित नहीं है पुस्तक के अन्तिम अध्याय में फ्रॉम इसी मनोविश्लेषणात्मक नैतिक दर्शन-जिसे मानववादी नीतिशास्त्र कहना पसंद करते है-की कठिनाइयों पर भी डालते हैं। कई पारंपरिक प्रेमका वर्णन करते हुए मानवीय संचेतना के पारंपरिक व मानववादी रूपों, Pleasure and happiness में Pleasure के विभिन्न रूपों व साधन-साध्य द्वन्द्व पर भी टिप्पणी करते हैं लेकिन उनकी गंभीर टिप्पणी नीतिशास्त्रीय व नैतिक आचरण में भेद को लेकर है प्रचलित नैतिकता की सर्वोच्चता पर प्रश्न खड़ा करते हुए फ्रॉम कहते हैं- नैतिकता किसी सामाजिक समूह में प्रचलित नैतिक संहिता की स्वीकृति है. नैतिक व्यवहार-जिसे प्रायः नैतिकता समझा जाता है-कहीं अधिक ग्राही प्रत्यय है। इसका प्रयोग किसी विशिष्ट सांस्कृतिक समूह के व्यवहार की बजाय सामान्यतः मानवीय आचरण पर किया जाता है। एक नैतिक व्यक्ति सामान्यतः नैतिकता का पालक होता है परन्तु एक नैतिकता पालक का सदैव नैतिक होना आवश्यक नहीं है।

अतः फ्रॉम एक व्यापक नीतिशास्त्र की ही नहीं एक व्यापक नैतिकता की भी माँग करते हैं। उनके अनुसार मनुष्य स्वयं में न शुभ है और न ही अशुभ फ्रॉम के अनुसार शुभ या अशुभ का अन्तिम निर्णय स्वयं मनुष्य में निहित है। स्वयं को अपने जीवन और अपने आनन्द के प्रति उसकी गम्भीरता में निहित है। अपने और अपने समाज के समक्ष उपस्थित नैतिक चुनौतियों का सामना करने की उसकी इच्छा और अन्ततः 'स्वयं होने' और 'स्वयं के लिए होने' के उसके साहस में निहित है।